राष्ट्रीय वेबिनार रिपोर्ट

विषय: *"उत्तराखंड: 25 वर्षों की सामाजिक यात्रा—उपलब्धियाँ, चुनौतियाँ और भविष्य की दिशा"*

आयोजक: समाजशास्त्र विभाग, राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत

सह-आयोजक: राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोटद्वार एवं राजकीय महाविद्यालय बिथयानी, यमकेश्वर

दिनांक : 10 नवम्बर 2025 माध्यम: ऑनलाइन (राष्ट्रीय वेबिनार)

राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत के समाजशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार ***"उत्तराखंड: 25 वर्षों की सामाजिक यात्रा—उपलब्धियाँ, चुनौतियाँ और भविष्य की दिशा"*** पारस्परिक ज्ञान व मंथन का एक महत्वपूर्ण मंच सिद्ध हुआ। इस संगोष्ठी के माध्यम से महाविद्यालय द्वारा राज्य गठन के 25 वर्षों के सामाजिक पहलुओं व परिस्थितियों की समीक्षा की गई। जिसमे मुख्य वक्ता प्रख्यात समाजशास्त्री प्रोफेसर भगवान सिंह बिष्ट (पूर्व विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल) प्रोफेसर योगेश शर्मा प्राचार्य, गुरु गोरखनाथ राजकीय महाविद्यालय विथ्याणी यमकेश्वर (पौड़ी गढ़वाल), प्रोफेसर प्रशांत कुमार सिंह विभाग अध्यक्ष- समाजशास्त्र, पंडित ललित शर्मा परिसर ऋषिकेश (श्री देवसुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय टिहरी गढ़वाल शामिल हुए।

वेबिनार का उद्देश्य

1. उत्तराखंड राज्य की 25 वर्षों की सामाजिक प्रगति का बहुआयामी विश्लेषण करना।
2. महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में हुई प्रगति और चुनौतियों पर चर्चा करना।
3. शिक्षा क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों एवं सुधार की संभावनाओं का मूल्यांकन करना।
4. स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति, उपलब्धता और सुधार की दिशा पर विचार करना।
5. पर्यावरण संरक्षण से जुड़े मुद्दों और पहाड़ी क्षेत्रों में सतत विकास की चुनौतियों पर विमर्श करना।
6. राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण एवं संवर्द्धन के उपायों पर चर्चा करना।
7. भविष्य की सामाजिक नीतियों एवं दिशा-निर्देशों के लिए सुझाव प्राप्त करना।

मुख्य वक्ता एवं विषय-वस्तु

इस आनलाइन संगोष्ठी के मुख्य वक्ता प्रोफेसर भगवान सिंह बिष्ट व अन्य अतिथिओ का प्राचार्य प्रोफेसर आनंद प्रकाश सिंह के नेतृत्व मे डॉ राजीव सक्सेना, डॉ. भूपनरायन दीक्षित, डॉ सुशीला आर्य, डॉ हेम कुमार गहतोड़ी, डॉ सुधीर मालिक जैसे समस्त प्राध्यापकों व कार्मिकों ने स्वागत व अभिनंदन किया। जिन्होंने अपने अनुभवों और ज्ञान से उत्तराखंड की सामाजिक यात्रा का विश्लेषण करते हुए सामाजिक परिवर्तनों और विकास की दिशा पर महत्वपूर्ण विचार रखे।

मुख्य वक्ता ने अपने विशद अनुभव, शोधपरक दृष्टि और संवेदनशील सामाजिक समझ के आधार पर उत्तराखंड की 25 वर्षों की सामाजिक यात्रा का विस्तृत मूल्यांकन प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि राज्य निर्माण के बाद सबसे बड़ा परिवर्तन जनता की **सामाजिक चेतना और जागरूकता** में आया है, जिसने विकास की प्रक्रिया को नई दिशा दी है। प्रो. बिष्ट ने जोर देते हुए बताया कि—

- उत्तराखंड में **महिला नेतृत्व और सहभागिता** अभूतपूर्व रूप से बढ़ी है, जो किसी भी सामाजिक परिवर्तन की सबसे शक्तिशाली धुरी है।
- पहाड़ी समाज की **आर्थिक चुनौतियों**, विशेषकर पलायन, बेरोज़गारी और संसाधनों के असमान वितरण, को वे राज्य की प्रमुख सामाजिक समस्या मानते हैं।
- उन्होंने पर्यावरण संरक्षण को राज्य की पहचान और अस्तित्व से जोड़ते हुए कहा कि **पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ना केवल प्राकृतिक संकट नहीं बल्कि सामाजिक संकट भी है**, जिसके समाधान में स्थानीय समुदाय की भूमिका अनिवार्य है।
- अपनी प्रस्तुति में उन्होंने उत्तराखंड के **युवा वर्ग** को राज्य के भविष्य का आधार बताते हुए उनके कौशल-विकास, शिक्षा और रोजगार के अवसरों में सुधार की आवश्यकता पर विशेष बल दिया।
- प्रो. बिष्ट ने यह भी सुझाव दिया कि नीतिगत प्रयास सफल तभी होंगे जब उनमें **जनसहभागिता, स्थानीय पारिस्थितिकी और सांस्कृतिक सरोकारों** को प्राथमिकता दी जाए।

सत्र में अन्य प्रमुख वक्ताओं में प्रोफेसर ए० एन० सिंह एवं प्रोफेसर प्रशांत कुमार सिंह शामिल रहे, जिन्होंने समसामयिक सामाजिक चुनौतियों—जैसे डिजिटल असमानता, जनस्वास्थ्य के उभरते मुद्दे, ग्रामीण-शहरी विभाजन, और सांस्कृतिक संरक्षण—पर गहन विचार रखे तथा उनके व्यवहारिक समाधान की रूपरेखा प्रस्तुत की। प्रो. ए० एन० ने अपने उद्बोधन में कहा कि डिजिटल परिवर्तन तभी सार्थक होगा जब समाज के अंतिम व्यक्ति तक तकनीकी पहुँच सुनिश्चित हो। उन्होंने डिजिटल साक्षरता को आधुनिक समय की सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक पूंजी बताया। प्रो. प्रशांत कुमार सिंह ने अपने वक्तव्य में जनस्वास्थ्य के सुदृढ़ीकरण, स्थानीय संसाधनों के उपयोग, और युवाओं में सांस्कृतिक चेतना बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि ग्रामीण-शहरी विषमता को कम करने के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का विकेंद्रीकरण अनिवार्य है।

सहभागिता

इस राष्ट्रीय वेबिनार में देशभर के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों से 150 से अधिक प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। सत्र के दौरान शिक्षकों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों ने पलायन, पर्यावरणीय असंतुलन, शिक्षा की गुणवत्ता, महिला सशक्तिकरण और सांस्कृतिक संरक्षण जैसे मुद्दों पर संक्षिप्त एवं सार्थक प्रश्न पूछे। विशेषज्ञों ने इन प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर प्रस्तुत करते हुए स्थानीय रोजगार सृजन, वन संरक्षण, डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता, कौशल-विकास तथा सांस्कृतिक धरोहर के दस्तावेजीकरण जैसे उपायों पर बल दिया। सार्थक संवाद ने वेबिनार को अधिक प्रभावी, उपयोगी और ज्ञानवर्धक बनाया।

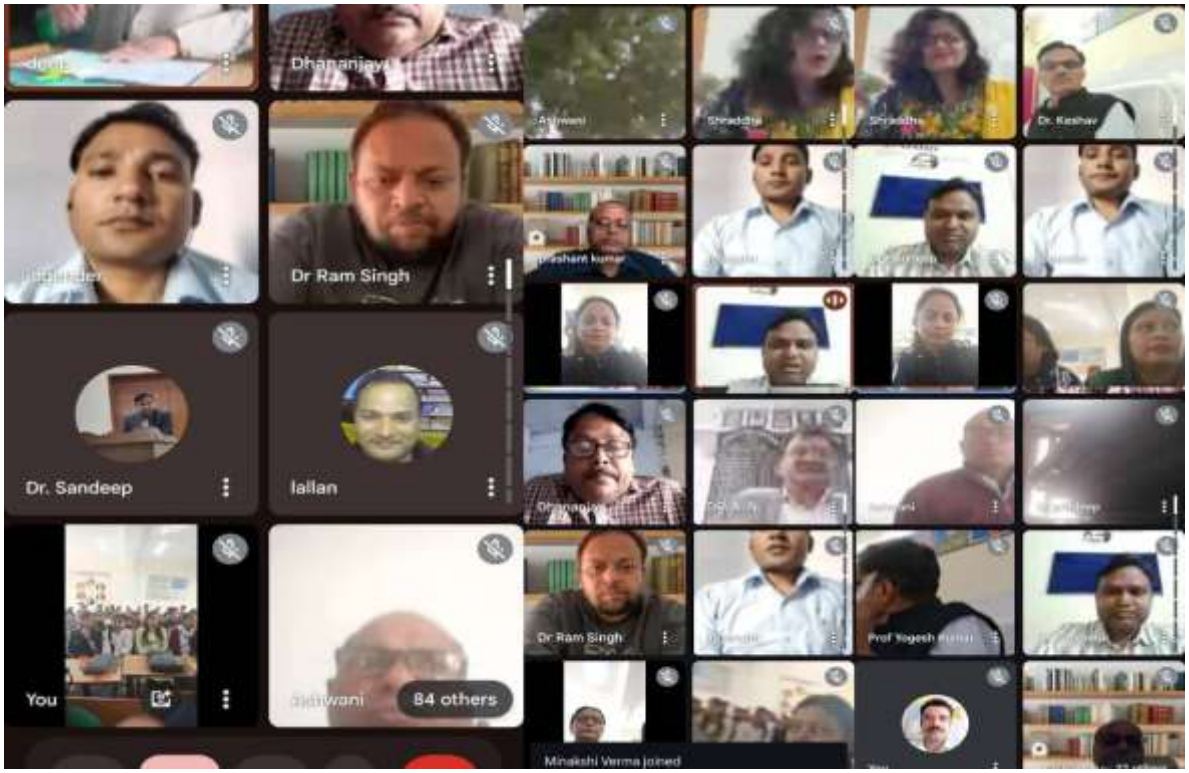

आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश सिंह ने अपने प्रेरणादायी संबोधन में कहा कि ऐसे शैक्षणिक आयोजन न केवल ज्ञान का विस्तार करते हैं, बल्कि छात्रों और शिक्षकों में शोध, संवाद और चिंतन की संस्कृति को भी सशक्त बनाते हैं। उन्होंने बताया कि समसामयिक सामाजिक चुनौतियों का समाधान तभी संभव है जब शिक्षण संस्थान समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को गंभीरता से निभाएँ।

निदेशक प्रो. वी. एन. खाली ने इस संगोष्ठी मे अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि ***"उत्तराखंड: 25 वर्षों की सामाजिक यात्रा' विषय पर आयोजित यह राष्ट्रीय वेबिनार राज्य की उपलब्धियों और चुनौतियों पर सार्थक संवाद का उत्कृष्ट मंच है। मुझे विश्वास है***

कि इस विमर्श से निकलने वाले सुझाव उत्तराखंड के सतत विकास और सशक्त भविष्य की दिशा तय करने में सहायक होंगे। मैं आयोजक एवं सह-आयोजक संस्थानों को सफल आयोजन हेतु शुभकामनाएँ देता हूँ।"

कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन समाजशास्त्र विभाग द्वारा किया गया। गुरु गोरखनाथ राजकीय महाविद्यालय विथ्याणी यमकेश्वर (पौड़ी गढ़वाल) के प्राचार्य प्रोफेसर योगेश शर्मा ने संगोष्ठी मे प्रतिभाग करने वाले सभी विद्वतजनों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने संगोष्ठी के मुख्य वक्ता, मुख्य अतिथि एवं उच्च शिक्षा विभाग के निदेशक प्रो. वी. एन. खाली तथा वेबिनार निदेशक प्रो. डी. एस. नेगी के मार्गदर्शन के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। साथ ही सभी अतिथियों, वक्ताओं, प्रतिभागियों एवं सहयोगी संस्थानों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

उन्होंने अपने उद्बोधन में वेबिनार के विषय *"उत्तराखंड: 25 वर्षों की सामाजिक यात्रा—उपलब्धियाँ, चुनौतियाँ और भविष्य की दिशा"* को अत्यंत प्रासंगिक बताते हुए कहा कि राज्य के 25 वर्षों की सामाजिक उपलब्धियों एवं चुनौतियों का सम्यक मूल्यांकन करना समय की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा कि *"उत्तराखंड की सामाजिक यात्रा तभी सार्थक हो सकती है जब विकास योजनाएँ जनसरोकारों, स्थानीय आवश्यकताओं और सतत विकास के सिद्धांतों के साथ आगे बढ़ें।*

नैनीताल जागरण

www.jagran.com

विकसित उत्तराखंड की राह में आने वाली चुनौतियों को लेकर जागरण विमर्श में समाजशास्त्री प्रो. भगवान सिंह बिष्ट ने रखे विचार

विकास के अभाव में बढ़ा डेमोग्राफिक चेंज खतरा, नीतियों के क्रियान्वयन की जरूरत

विमर्श

कार्यक्रम समन्वयक के रूप में ***डॉ. संदीप कुमार***, तथा आयोजक सचिव के रूप में ***डॉ. राजीव कुमार सक्सेना*** एवं ***डॉ. राम सिंह सामंत*** ने कार्यक्रम की सफल रूपरेखा, समन्वयन और सुचारु संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनकी कार्यकुशलता, समयबद्ध व्यवस्था और प्रतिभागियों के प्रति सहयोगात्मक दृष्टिकोण ने पूरे कार्यक्रम को प्रभावी एवं परिणामकारी बनाया।

प्राचार्य

प्रोफेसर आनंद प्रकाश सिंह

राजकीय महाविद्यालय बनबसा